20 FRIDAY

जीवेम शरदः शतम्

जीवेम शरदः शतम् हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध है इस निबन्ध में निबन्धकार ने भारतीयों में बहुत प्राचीन काल से चली आ रही प्रार्थना जीवेम शरदः शतम् का वर्तमान संदर्भों में महत्व और अर्थवत्ता स्थापित की है। इस

21 SATURDAY प्रार्थना में सौ वर्ष जीने की कामना की गयी है। किन्तु सौ वर्ष कैसे ही जीना नहीं है। सौ वर्ष दैन्य से रहित जीवन जीने की कामना की गयी है।

सक्रिय और विचार सहित जीवन जीने की इच्छा हमारे प्राचीन समाज में

Scanned with CamScanner

प्रचलित रही है। कर्म करता हुआ जीवन ही प्रयोजन है। किन्तु केवल प्रार्थना या संकल्प के कथन होने से काम नहीं बनता। संकल्प के पीछे दृढ़ कर्म शक्ति भी चाहिए। किसी भी महान संकल्प के लिए दृढ़ संयम और निष्ठा सबसे पहली शर्त है। सौ वर्ष तक जीवित रहने के महान संकल्प के लिए दृढ़ संयम आवश्यक है।

22 SUNDAY

जितेन्द्रियता चरित्रबल की कुंजी है। आजकल जिसे भारतवासी ~~जितेन्द्रियता~~ चरित्रबल कहा जाने लगा है उसे पुराना भारतवासी जितेन्द्रियता कहता था। अपने आदर्शों के प्रति अविचल निष्ठा इसी गुण से आती है। दुर्भाग्यवश हमारे देश के शिक्षितों में भी इस गुण का अभाव ही बढ़ता जा रहा है। हमारे देश की सामूहिक समस्या इस समय चरित्रगत कमजोरी है। चरित्रबल न रहे तो आदमी अपने संकल्प का अर्थ भी नहीं समझना चाहता। क्योंकि जो व्यक्ति यह प्रार्थना करेगा कि मैं दैन्यरहित होकर सौ वर्ष जीवन व्यतीत करूँ ~~इसमें निसंदेह स्वाभिमान की मात्रा बहुत~~

23 MONDAY

24
TUESDAY

अधिक होगा ~~बदले~~ दूसरे को दीन बना
कैसा समता है। अर्थात् जो लोग यह प्रार्थना
करते हैं वे दूसरे को दीन नहीं बनाएँगे।

आजकल यही होता है कि लोग प्रार्थना तो
करते हैं परपीडन का चमत्कार को चलता है। अब
यह अवस्था हो गयी है कि हमारे इस मौखिक संकल्प
का कोई मूल्य ही नहीं रहा। हमारे देश की औसत
आयु घटते-घटते बीस वर्ष के आसपास रह गयी
है।

25
WEDNESDAY

जहाँ तक इस देश का इतिहास है यहाँ
अनेक बड़े बड़े धार्मिक ~~और~~ आध्यात्मिक,
संप्रदाय के आन्दोलन चले हैं। पर देर तक
नहीं चल पाये हैं। ~~कैसे~~ - कैसे दृढ़ निश्चयी
और त्यागी वीर हुए हैं जिनके नाम लेने से
ही हृदय और मन पवित्र हो जाता है। वे मान-
क्रोधादि से विचलित नहीं हुए हैं। पर उनका
संदेश समूह का सेवनीय बना है।

Scanned with CamScanner

26 THURSDAY

आचरण की सभ्यता : सरदार पूर्णसिंह

आचरण की सभ्यता अध्यापक पूर्णसिंह का बहुत प्रसिद्ध निबन्ध है। इसमें निबन्धकार ने आचरण की सभ्यता के महत्व को अभिव्यक्त किया है। और यह भी बताया

---

27 FRIDAY

गया है कि आचरण का प्रभाव किसप्रकार अपना असर दिखाता है। आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है इसलिए पूर्ण सिंह आचरण को प्रेम से जोड़ते हुए कहते हैं कि प्रेम की भाषा शब्दरहित है। निबन्धकार के अनुसार उसका अनुभव

Scanned with CamScanner

28 SATURDAY

उसके प्रभाव जीवन में आने वाले मनुष्य स्वयं महसूस करते हैं।

निबन्धकार का मानना है कि आचरण के विकास में सांसारिक - कार्य व्यापारों की महती भूमिका होती है - "मनुष्य का जीवन इतना विशाल है कि

29 SUNDAY

उसके आचरण को रूप देने के लिए नाना प्रकार के ऊँच नीच और भले - बुरे विचार, अमीरी और गरीबी उन्नति और अवनति इत्यादि सहायता पहुँचाते हैं।" जो कुछ भी संसार में घट रहा है वह सब आचरण के विकास के लिए हो रहा है। संसार से विरक्त

Scanned with CamScanner

30 MONDAY

होकर, मुँह मोड़कर आचरण की सभ्यता का विकास संभव नहीं।

पूर्ण सिंह के लिए आचरण का महत्व इतना अधिक है कि वह उसे जीवन का परमोद्देश्य मानते हैं। आचरण केवल मन के स्वप्नों से कभी नहीं

JULY

01 TUESDAY

बना करता। वह कहते हैं कि प्राकृतिक सभ्यता के आने पर मानसिक सभ्यता आती है। आचरण की प्राप्ति एकता की दशा की प्राप्ति है। आचरण विषयों के ऊपर संयम स्थापित करता है।

आचरण की सभ्यता का देश ही

Scanned with CamScanner

02 WEDNESDAY निरला है। वहाँ तो प्रेम और

एकता का अखण्ड राज्य है।

इस निबन्ध की भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण एवं संस्कृतनिष्ठ है।

आचरण की सभ्यता continue:—

इस यंत्र युग में समाज की शक्ति बढ़ गयी है। हमें कोई ऐसी व्यवस्था सोचनी पड़ेगी कि

03 THURSDAY प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ज़रूरत से अधिक संग्रह करने का अवसर प्राप्त न हो। औसत व्यक्ति की चरित्र शक्ति को हीन और दुर्बल बनानेवाले बातों को समाज से हटाना है। अर्थात हमारी साधना केवल व्यक्तिगत उपदेश तक सीमित नहीं रहनी चाहिए उसे सामाजिक रूप देना चाहिए ताकि उनका चरित्रबल बनाये रहें। अर्थात सामाजिक शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा आदि की ओर अग्रसर होने को बाध्य हो जाये है, तो हम सामाजिक रूप से जनता के चरित्रबल को ~~सुरक्षित करने सकते है। इस ओर भी कदम उठाना है।~~ तभी वैदिक ऋषि के बनायी हुई इससे यह प्रार्थना फलवती होगी।

Scanned with CamScanner